पटरी से पटरी का सफर

धनबाद स्टेशन से आने वाली पक्की सड़क कचहरी थाना हीरापुर पुलिस लाईन से होते हुए गोविन्दपुर के आगे बंगाल प्रान्त तक जाती है।इस सड़क से इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स के अहाते से आई एक सड़क भी मिलती है।ठीक यहीं माईनिंग ऑफिस के क्लर्क्स कॉलनी से भी एक सड़क आकर मिलती है।इसी तीनमुहानी पर धनबाद का सबसे गन्दा,पर बेहद चलता मनि के इडली दोसे का एक ढाबा है।साथ साथ पान,बिड़ी सिगरेट,चाय इत्यादि की अनगिनत गुमटियॉ हैं।समीप ही माईनिंग ऑफिस का एक बड़े से अहाते मे फैला कल्चरल हॉल है।तीनमुहानी के एक ओर एक ढलाऊ सी जमीन पर बहुत ही पुरानी जर्जर एसबेस्टस की एक बैरक है,जिसमे सात कमरे हैं।इसके एक कमरे मे सी पी डब्ल्यू डी के मंहगू सिंह वर्षो से रह रहे थे।सामने की जमीन घेरघार कर वो एक छोटा सा बगान भी बना रखे थे।पानी के नाम पर बैरक के सामने एक कुँआ था,जो कभीं शायद पक्का रहा होगा।अब तो उसके चबूतरे के एक एक ईटें तक गिने जा सकते थे।बैरक के बाकी कमरो मे यहॉ वहॉ के क्लर्क्स,मनि का एक रिश्तेदार या फिर आरा,बलिया ,छपरा से नौकरी की तलाश मे आए फलाने के साले या फलाने के बहनोई इत्यादि रहते थे।मंहगू सिंह के अलावे दूसरे कमरों के लोग बदलते रहे।

इसी बैरक के बगल से एक कच्चा रास्ता जगजीवन नगर के उच्च बुनियादी विद्यालय तक जाता था।इस रास्ते को हम कुत्ते वाला रास्ता कहते थे।बैरक के पीछे की उबड़ खावड़ पुटुस के झाड़ो से भरी जमीन पर बाद के दिनो मे प्रोविडेन्ट फन्ड ऑफिस के क्लर्को के लिए एक कॉलनी बनी ,पक्के रास्ते बने,सैकड़ो गुलमोहर के पेंड़ लगे,यहॉ तक कि एक शंकर भगवान की मंदिर भी बनी,पर ये बैरक अभीं भी अविक्षित खड़ी रही।एक तरह से मेरे लिए ये बैरक धनबाद की एक सराय या धर्मशाला या फिर शरणार्थी शिविर की तरह था।

इसी बैरक के अन्तिम कमरे मे एक रंडी को भी शरण मिली।उसकी उम्र तो कोई खास नही थी,पर उसका शरीर ढलकर बेहद थुलथुला सा हो चला था।उसे कोई बीमारी हो गई थी।इस वजह से क्लर्क या सिपाही तबके के लोग अब उस बैरक की तरफ रूख न करते थे,पर अभी भी दो चार शराबी कबाबी व एकाध रिक्सेवाले उसके गाहक थे।

जिस धनबाद की उसने वर्षो सेवा की,अपने ऊपर होने वाले सामूहिक बलात्कार को भी सहज लिया,कितनो का एकाकीपन बॉटा,आज वही धनबाद उसकी छाया से भी दूर भागता था।सैकड़ो हजारो दिलों पर राज करने वाली ये मल्लिका अब धनबाद मे एक परित्यक्त्का की जिन्दगी गुजार रही थी।उसके एक एक रेशे को अलग करने वाला धनबाद अब उसे कोरेक्टरलेस,छिनार,शराबी और सड़ी रंडी कहने लगा था।वर्षो होटलो,रेस्त्राओ से खाना मॅगवाकर खानेवाली अब स्वयम चूल्हे झोंक रही थी।मेन सड़क पर उसके आते ही रिक्सेवाले कतारों मे लग जाते थे।मेमसाहब मेमसाहब कहते वो अघाते तक न थे।अब वो ही इन रिक्सेवालों से दो चार आने के लिए न सिर्फ गारी गुप्ता करती थी,बल्कि किराये के बदले उन्हे अपने कमरे मे आने को गिड़गिडाती थी।

इस तीखे नैन नक्श व घॅुघराले लम्बे बालों वाली रंडी का एक बड़ा खूबसूरत सा नाम था,उर्मिला।उर्मिला पान खा खाकर अपने दॉत तो काला कर ही चुकी थी,अब उसे पीने की भी लत पड़ चुकी थी।रोज ही शाम के धॅूधलके मे पैदल ही झरनापाड़ा के देशी शराब के ठेके से वो एक बोतल ठर्रा खरीद लाती थी।

एक दिन उसने भी अपना बोरिया बिस्तर बॉधा और धनबाद को अल्विदा कहा।धनबाद ने सकून की सॉस ली।अब उसकी वजह से कई सम्मानित बाबूओ को अपने रास्ते न बदलने पड़ते थे।

चाय,पान की गुमटियों मे फिर भी वो वर्षो तक चर्चा की विषय बनी रही।धनबाद छोड़ने के बाद किसी ने उसे लक्षीपुर ढाल मे देखा तो किसी ने उसे दानापुर छावनी मे,कोई उससे शाहजहॉपुर मे टकराया तो कोई गोरखपुर मे।कोई उसे फलाने जगह भीख मॉगते देखा,तो कोई उसे फलाने स्टेशन पर कचौरी तलते देखा।

उसने धनबाद क्या छोड़ा कि उसे भोगने वाले तो प्रकाश मे आये ही,उसके बलात्कारी भी खुल्लम खुल्ला अपनी अपनी हॉकते रहते थे।चटकारी ले लेकर वो उर्मिला का पोस्टमार्टम करते रहते थे और ठहाका लगाते रहते थे।।उर्मिला गजब की माल थी,जिनिस थी जिनिस।इस बारे मे धनबाद की कभीं दो राय न रही।

इस उर्मिला को मै उन दिनो से जानता था,जब वो सिर्फ सात वर्ष की थी,और एक फटे फ्रॅाक व आधी बॉह की हरी स्वेटर पहने अपनी मॉ के साथ हमारे घर बर्त्तन मॉजने आती थी।उसे किसी दूसरे घर से एक ऊनी कनटोपी मिली हुई थी,जो वो गर्मी के दिनो मे भी पहने रहती थी।उसका स्वेटर भी उसके घुटने तक आता था।

हमारी दाई का भी एक बेहद खूबसूरत नाम था रमा,पर सब उसे दॅतुली दाई ही कहके बुलाते थे।उसके सामने के दो दॉत कुछ ज्यादे ही बाहर निकले हुए थे,जिन्हे चाहकर भी वो अपने ओंठो से न छुपा पाती थी।वो आरा जिले की रहने वाली थी और जात की कॅहारिन थी।मेरी मॉ भी आरा जिले की हैं।रमा के बात व्यवहार मे सदा ही एक मौसी का पुट रहा,जिसे न सिर्फ मॉ,बल्कि मेरे सारे भाई बहन नकारते रहे,क्योंकि वो हमारी दाई थी।

मै नही समझता कि बिहार प्रान्त के आरा जिले के अलावे कहीं और मौसी का सम्बन्ध ज्यादे प्रखर और मुखर है।बस यहीं मैने एक बहन को अपनी बहन और उसके बच्चों के लिए रोते कलपते देखा और बहनो के बीच न कोई प्रतिस्पर्धा देखी,न कोई ईर्ष्याभाव।मेरी मॉ पूरे गॉव की कनिया थी और हम पूरे गॉव के लाड़ले।ये बस आरा मे ही सम्भव है,कहीं और नहीं।पाहुन,कनिया,भईना जैसे मिसरी मे पगे शब्द बस इसी जिले की भूमि पर सुने जा सकते हैं।

रमा की दो छोटी बहने पहले से ही धनबाद मे रहती थीं और दोनो दो सगे भाईयों को ब्याही हुई थी।एक का पति राजगिरी इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स मे चौकीदार था।दूसरे भाई को बाबूजी इसी कॉलेज के स्पोर्टस डिपार्टमेन्ट मे डेलीवेज पर लगवा रखे थे।वो हमारे घर पर रहकर गाय बगान की देखभाल के अलावे घर के दूसरे कामो मे मॉ का हॉथ बॅटाता था।रमा का बूढा बेरोजगार,अशक्त,अर्कमण्य पति जात का कॅहार होते हुए भी अपने नाम के आगे सिंह लगा रखा था,रामनाथ सिंह।रमा उसे बुढऊ कहके बुलाती थी।घर का सारा खर्चा रमा ही चलाती थी।हमारे घर के अलावे उसके पास

चार दूसरे घरों मे भी बर्त्तन मॉजने व झाड़ू पोछा के काम थे।रमा की दूसरी बहनो के पास भी तीन चार घरों के काम थे।ये तीनो परिवार हमारे घर के समीप ही धईया मे एक बनिये के बैरकनुमा मकान मे साथ साथ रहते थे।इस मकान मे तीन कमरे और एक लम्बा सा बरामदा था।बरामदे के ऊपर एक छत भी थी।धईया की काफी जमीने इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स के नाम पर केन्द्रीय सरकार द्वारा खरीदी जा चुकी थीं.जहॉ नए नए संकायो की बिल्डिंगे.हॉस्टल्स.स्वीमिन्ग पूल्स.मेसें.स्टेडियम इत्यादि बनने वाले थे।धईया मे बसे धोबी.बनिये.दर्जी.छोटे बड़े दुकानदार.हलवाई सभी को अपने अपने मकानो गुमटियो व झुग्गियों के एवज मे मुवायजे मिल चुके थे।वहॉ के कई मकान खाली हो चले थे.कई खाली हो रहे थे।बसी बसाई धईया उजड़ रही थी।खाली मकानो मे यहॉ वहॉ के लोग आ बसे थे।

रामनाथ अपने जवानी के दिनो मे आरा के मेन जंक्शन पर पान.बिड़ी.सिगरेटे बेचा करता था।इस पूरे परिवार मे बस वही थोड़ा पढा लिखा था।शायद यही वजह रही होगी कि वो अर्कमण्य था।ये थोड़ी सी विद्या किसे अर्कमण्य नही बना डालती है!

पता नही किस वजह से उसका लाइसेन्स छीन लिया गया और वो बेरोजगार हो गया।जहॉ रमा की दूसरी बहने तीन तीन बेटो की मॉ थी.वहॉ रमा के गर्भ ही न ठहरते थे।हर वर्ष वो भी गर्भवती होती थी.पर दूसरे तीसरे महीने मे ही उसका गर्भ गिर जाया करता था।पैसे के अभाव मे वो अपना इलाज तो न करवा सकी.पर अपनी ढलती उम्र तक कम से कम एक बेटे की मॉ बनने की उसकी लालसा न टूटी।

एक दिन आरा जंक्शन पर रामनाथ को ठीक ठाक कपड़ो मे लिपटी पटरियो के बीच एक नवजात बच्ची दिखी।वो झट से कूदकर बच्ची को उठा लाया।मिनटो के अन्दर इन्ही पटरियों पर तूफान मेल आने वाला था।रामनाथ का पता ठिकाना लेकर बच्ची उसे सौप दी गई।इस बच्ची के मॉ बाप का पता न चल पाया.या फिर उन्हे ढूँढा ही न गया।रमा ने बच्ची को सीने से चिपका तो लिया.पर अपनी कोख का एक बेटा उसे सालता राहा।जिन दिनो वो हमारे घर पर काम करती थी.उसका एक गर्भ कुछ ज्यादे ही लम्बा टिक गया।उठने बैठने मे वो बड़ी सावधानी बरतती थी।काम के बाद वो हमारे ऑगन मे कोयले के ढेर के बगल मे दीवार से लगकर बैठ जाती थी।कच्चे अमरूद ही नही.चूल्हे की सोंधी मिट्टी तक कचर कचर खाती रहती थी।रह रह कर पेट से अपना ऑचल हटाकर अपना पेट सहलाया करती थी।पॉचवे महीने मे उसका ये गर्भ भी गिर गया।कई दिनो तक उसके ऑसू न सूखे।ये उसका आखिरी गर्भ था।रमा का ममत्व जागा।उसने पहली बार अपनी बेटी को दोनो ऑखो से निहारा.जो अब सात वर्ष की हो चली थी और जिसके कान वर्षो से बिटिया सुनने को तरस रहे थे।उसे गोद मे लेकर वो घन्टो रोती रही.सैकड़ो आशीषे देती रही.अपना पूरा ममत्व लुटाती रही।

इस अनाम बच्ची को रामनाथ से एक नाम मिल चुका था उर्मिला.पर रमा उसे उरमिलवा कहके बुलाती थी।काम पर जाने के लिए उर्मिला ही रमा को ये गाकर..मईया रे भिनसरवा भइलौ ना..जगाती थी।

जब धईया के मकान गिरने लगे.तो राजगिरी और जयराम को तो सरकारी क्वाटर्स मिल गए.बस रमा का परिवार बेघर हो गया।इन्हे शरण मिली.प्रो बी एन झा के सर्वेन्ट क्वाटर मे।प्रो झा का बॅगला गोविन्दपुर रोड पर रजिस्ट्रार साहब वाले गेट के समीप था।उनके यहॉ रमा काम भी करती थी।हमारे घर से दूर रहते हुए भी उसने हमारे घर का काम नही छोड़ा।नियमित वो अपनी बेटी के साथ ठीक सुबह के छ बजे व दोपहर के तीन बजे हमारे घर आती रही।ये क्रम वर्षो तक चलता रहा।

उर्मिला अब चौदह वर्ष की हो चली थी।कमानीदार भवें.बड़ी बड़ी ऑखे.घने घूँघराले बाल.इन सबके बावजूद उसका गोरा रंग.अब वो साड़ी पहनने लगी थी।उसे आते जाते देखकर कौन नही ठिठक पड़ता था!रास्तों पर रमा उसे आगे पीछे करके अपनी आड़ देती रहती थी।थोड़ी बहुत उसकी धर पकड़ भी होती रही।कौन सी सुरक्षा रमा उसे देती!न वो घर पर सुरक्षित थी.न घर के बाहर।लफन्गे तो एक तरफ रहे.रमा को किसी पर भरोसा न रहा।प्रोफेसर.लेक्चरारो पर भी नही.न उनके बेटों पर.जो यहॉ वहॉ डॉक्टरी या इंजीनयरिंग पढ रहे थे।

मेनकाओ के आगे तो तपस्वियों के तप तक पिघले हैं।

बाबूजी के सिफारिश पर रामनाथ को अपने बुढापे मे समीप के ही पी के राय मेमोरियल कॉलेज मे रात की चौकीदारी मिल गई।घर मे बॅधी बॅधाई तनख्वाह आने लग पड़ी।रमा ने प्रो झा के घर के अलावे सारे काम छोड़ दिये।दिन भर घर पर बैठी बस उर्मिला की पहरेदारी करती रहती थी।उर्मिला की शादी के चक्कर मे वो कई बार अपने गॉव भी गई.पर उसे एक भी ढंग का कमाऊ दामाद न टकराया।रमा अब अपने आगे के दो दॉत तुड़वाकर नकली दॉत लगवा लिए थे.फिर भी उसके ओंठ खुले ही रहते थे।बेटी का भविष्य उसे खाए जा रहा था।इस अधखिले.अछूते फूल को वो किन कदमो मे डाले!राजकुमार तो दूर रहे.उसे तो कोई ढंग का कॅहार तक न मिल रहा था।अगल बगल दॉये बॉये बस भूखे भेड़िये ही लार टपकाते खॉऊ खॉऊ कर रहे थे।इसी बीच उसे टी बी हो गई।बिड़ी तो वो अपने बचपन से ही पीती आ रही थी।

इन तीन बहनो मे मॅझली बहन का ही परिवार एक तरह से संतुलित व समान्य बना रहा।राजगिरी अपनी चौकीदारी करता रहा और उसकी पत्नी भी तीन चार घरों का कामकाज सम्हाले रखी।इनके बच्चे भी बड़े हो चले थे.और म्यूनिसपैलिटी के स्कूलो मे पास फेल हो रहे थे।जयराम को भी इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स मे ही माली की परमानेन्ट नौकरी मिल चुकी थी।कैम्पस के गोल फूल बगान मे दिन भर अपनी खुरपी लिए वो इधर उधर निकल आई घासें निकियाता रहता था।फूल पौधों की दुनिया मे उसे बस इतना ही आता था।उसकी नौकरी पिरमामेन्ट होते ही उसकी पत्नी ने लोगो के घरों मे बर्त्तन मॉजने का काम बन्द कर दिया।जयराम के सारे बेटे जयराम पर ही गए थे.स्वस्थ गठीले व शान्त।अब जयराम के पत्नी की जवानी भड़की.जो जयराम के वश की न थी।वो पड़ोस के दूबेजी व तिवारीजी के बिस्तर गर्म करने लग पड़ी।इस कॅहारिन को अब बाम्हनो का स्वाद लग चुका था।जयराम बाद के दिनो मे कुछ ज्यादे ही चुप रहने लगा था।घंटो एक ही झाड़ के नीचे अपनी खुरपी लिए वो बैठा रहता था।उसकी पत्नी आम्रपाली बन कर पूरे चौकीदार क्वाटर्स की सेवा मे तन मन से लगी थी।वो लोगों के घर शाम का खाना भी बना आती थी।लोगो को खिला पिलाकर खुद खा पीकर बचा खाना लिए वो घर आती।जयराम अपने भूखे प्यासे बच्चों के साथ अपने क्वाटर के सामने बॅसहटी पर न सिर्फ अपनी पत्नी का इन्तजार करता रहता था.बल्कि ये भी देखा करता था कि आज क पकवान दूबे जी के घर से आवत ह कि चौबे जी के घर से!आज खाना पर खीर मिली कि सेवई!कम पड़ने पर उसकी पत्नी झिड़ककर एकाध लिट्टियॉ सेंक देती थी।दसों बार इन बेचारों को कुम्भकरन सुनने को मिलते थे।

ये अविश्वसनीय तो है.परन्तु अप्रत्याशित इस गठीले व कसरती जयराम को कोढ हो गया।ये छुआ छूत वाला कोढ न था.इस वजह से उसकी नौकरी

तो बच गई. पर उसके हॉथ पैर गलने लगे। वर्षो तक जयराम सबकुछ देखता रहा. सहता रहा. झेलता रहा. बस एक दिन उसकी हिम्मत जवाब दे गई। हेड माली मल्लू के अनुसार दिन के ठीक ग्यारह बजे जयराम एक मोरपंखी झाड़ के नीचे अपनी खुरपी हॉथ मे लिए लेट गया और फिर उठा ही नही। उसकी उम्र मात्र पैंतीस वर्ष की थी।

ऐसे वक्त उसके पत्नी की सेवायें बड़े काम आई। चौकीदार क्वाटर्स व क्लर्क क्वाटर्स की मिली जुली गुहार कॉलेज के तत्कालीन निदेशक मरवाहा साहब के कानो तक पहुँची। जयराम की पत्नी को एल ब्लॉक हॉस्टल मे दाई की परमानेन्ट नौकरी मिल गई। ये हॉस्टल समय के साथ एक गेस्ट हाउस बन चुका था। अन्धे को और क्या चाहिये बस दो ऑखे। जयराम की पत्नी ने मेहमानो के बिस्तर ही न बदले. वल्कि खुद भी उसमे जा घूसी। उसकी उम्र भी उन दिनो यही कोई चौबीस पच्चीस वर्ष रही होगी। गरीबों की जवानी तो बस दो जून के खाने की मोहताज है। इन्हे दो जून का खाना मिल जाय तो इन्हे हेमा और श्रीदेवी बनने मे चौबीस घन्टे भी नही लगते। फिर इनके बदन के नकली सस्ते जेवर भी हीरे सोने की तरह दमक उठते हैं।

सदर अस्पताल के तमाम इलाजों के बावजूद रमा की टी वी भड़कती ही चली गई। उसका स्वास्थ्य गिरता गया। खुली ऑखें व खुले ओंठों से उसने एक दिन इस संसार को विदा कहा। बस उसके दो सपने पूरे न हो सके। न तो वो अपने कोख से रामनाथ का एक बेटा जन सकी और न अपनी उरमिलवा का हॉथ ही पीला करवा सकी। अब उर्मिला का एकमात्र संरक्षक था उसका बूढा बाप. जो घन्टों अपनी छाती थामे खॉसता ही रहता था।

प्रो झा का सर्वेन्ट क्वाटर भी गोविन्दपुर रोड से लगा हुआ था। तीन चार बन्गले के बाद पी के राय मेमोरियल कॉलेज था. जहॉ धनबाद के एक से एक छँटे अवारे. गुन्डे और बदमाश पढाई के नाम पर गुलछर्रे उड़ाने आते थे। आते जाते तो वो सिटियॉ बजाते ही थे. बाद के दिनो मे तो वो दीवार लांघ कर उर्मिला को भी धर दबोचने लगे। प्रो झा अपनी लुन्गी सम्हालते टेलीफोन की ओर झूठे ही लपकते. तभी ये बदमाश भागते थे। प्रो झा की अपनी तीन बेटियॉ भी जवान हो चली थी। उनका भी बरामदे मे उठना बैठना दूभर हो चला था. ऊपर से उर्मिला का भी सिरदर्द। मैथिली मे गरियाते गरियाते उनके नाक मे दम हो चला था। अब दया माया एक तरफ खिसका कर वो रामनाथ को घर खाली करने की नोटिश दे डाले।

इसी दरम्यान एक और कहर रामनाथ पर टूटी। पी के राय कॉलेज के कैश सेक्शन मे चोरी हो गई। एडमिशन फीस के सारे रूपये चुरा लिए गए। रामनाथ अपनी जगह से हिला तक नही और डर की वजह से हल्ला गुल्ला तक न मचाया। बस अपनी जगह पर बैठा अपनी जंघिया धोती गिली करता रहा। उसे तो ऐसी कॅपकॅपी लगी. जैसे वो साक्षात यमराज ही देख लिया हो। बयान की जगह वो बुखार से तपा बस भूत भूत बड़बड़ाता रहा।

उसकी नौकरी न रही. मकान भी हॉथ से गया। एक टीन के बक्से मे उसने अपना सामान ठूँसा। आगे आगे रामनाथ अपनी बॅसहटी लिए पीछे पीछे उर्मि ला एक बक्सा थामे स्कूल ऑफ माईन्स के मेनगेट पर अर्थात तीनमुहानी आ पहुँचे। सड़क के किनारे थोड़ी सी जगह खाली थी। रामनाथ वहीं एक इमली पेंड़ के नीचे पुटुस की झाड़ साफ सूफ करके इधर उधर से पटरी पतरे जमा करके एक झुग्गी डाल लिया और सायकिलों के पंचर ठीक करने लगा। उर्मिला इसी झुग्गी मे दिन भर कैद रहती थी। अँधेरा होने पर ही वो झुग्गी से बाहर निकलती और चूल्हा जलाकर झटपट कोई सब्जी बनाकर दो चार लिट्टियॉ सेंक लेती। बाप को खाना देकर फिर स्वयम अपना खाना लिए झुग्गी मे कैद हो जाती। रामनाथ ठीक झुग्गी के सामने अपनी बॅसहटी डालकर सोता था। इन्हे क्या पता था कि इनके साथ अब कौन सा खेल होने वाला है! रहीमन दास ने बस सात चीजे गिनवाये. जो न दवाये जा सकते हैं न छुपाये. खैर खून खॉसी खुशी बैर प्रीति और मद्दपान। वो सौन्दर्य भूल गए थे।

कल्चरल हाऊस से सटा ही एक पुटुस व दूसरे झाड़ो से भरा अहाता था. जहॉ एक बिना दरवाजे का एक टूटा फूटा कमरा था. जिसमे एक मुजफ्फरपुर का नक्सलाईट रहता था. अम्बिका। उस पर मुजफ्फरपुर जाने या फिर वहॉ देखे जाने पर सरकारी प्रतिबन्ध था। धनबाद मे वो इधर उधर की दलाली किया करता था। मिलनसार तबियत होने की वजह से धनबाद मे उसे दोस्तो की कभी कमी न रही। उसी की अगुवाई मे एक रात आठ दस लफन्गो का झुन्ड शराब के नशे मे धुत्त रामनाथ की झुग्गी पर जा पहुँचा। रामनाथ के मुँह मे वो उसी की लुंगी ठूँसकर. उसे उसी की बॅसहटी पर अपने कमर की बेल्टों से बॉधकर उर्मिला को उठा ले गए। कल्चरल हाऊस के बरामदे मे रात के एक बजे से लेकर सुबह के चार बजे तक वो उर्मिला को भोगते रहे। यहॉ तक कि वो कब की अचेत हो गई थी। इन बदमाशों के जाने के बाद एक दो रिक्सेवाले भी. जो मेनगेट पर अपनी रिक्सों पर सो रहे थे. वहॉ जा पहुँचे और बेहोश उर्मिला को भोग कर अपना जीवन तर कर आए। इन बदमाशों मे मेरे स्कूल का एक साथी भी था। कई वर्षो के बाद उसी के मुँह से मै इस बलात्कार का सविस्तार वृतान्त सुना। सुबह हुई हल्ला मचा. पुलिस भी आई। उर्मिला को ढूँढने मे ज्यादे वक्त न लगा। कल्चरल हाऊस के सामने सैकड़ों की भींड़ जमा हो चली थी। उर्मिला बरामदे के नंगे फर्श पर नंगी अचेत अपने दोनो पॉव फैलाए पड़ी थी। रामनाथ जंघिया पहने अपनी लुंगी मुँह पर रखकर फफक फफक कर रो रहा था। सैकड़ो की भींड़ अचेत नंगी उर्मिला का सौन्दर्यपान कर रही थी। रामनाथ ही उसे किसी तरह उसकी खुली साड़ी. जिसपर वो पड़ी थी. से लपेट लपाट कर रिक्से मे बिठाकर सदर अस्पताल भागा। यहॉ उर्मिला महीनो पड़ी सड़ती रही। रामनाथ फेरीवालों से उनके बचे गले केले व नारंगी खरीदकर रोज ही उससे मिलने जाता। बाप का हॉथ थामकर बस वो अपने बाप से एक ही सवाल करती थी॰

॰हमहन केकर का बिगड़ले रहलीं! हमने किसी का क्या बिगाड़ा था!॰

रामनाथ भी क्या जवाब देता!. इ कुल दोस हमहन के गरीबी क ह बच्चा। ॰ये सारा दोष हमारी गरीबी का है बेटा॰

फिर बाप बेटी एक दूसरे का हॉथ थामकर घन्टो रोते रहते थे। कौन किसके ऑसू पोंछता!

पूरा धनबाद इन बलात्कारियों को जानता था. लेकिन किसी ने चूँ तक न कसी। बात आई गई हो गई। ऐसा भी क्या अपराध था बलात्कारियों का! खाने वाली चीज खाई ही जाती है। उसका अँचार थोड़े ही पड़ता है। गदराए आम पर कौन अपना सोंटा नहीं फेंकता!

जगजीवन नगर के उबड़ खाबड़ मैदानों मे बुलडोजर चल रहे थे। वहॉ प्रोविडेन्ट फन्ड ऑफिस के क्लर्को के लिए कॉलनी बनने जा रही थी। ऑफिस के कमिश्नर चन्द्रा साहब अभी भी क्लर्को की बहाली किये जा रहे थे. जबकि सैकड़ों क्लर्को के बैठने तक की जगह ऑफिस मे न थी। ऑफिस के आधे से ज्यादे क्लर्क दिन भर सामने की गुमटियों मे ही अडा मारे रहते थे। फलाने का साला. फलाने का बहनोई. बड़े बाबू का भतीजा. सेक्शन ऑफीसर का दामाद. जिसे देखो वही बी ए थर्ड डिवीजन से पास करके क्लर्की करना चाह रहा था। बेचारे मलकट्टे! उनके वर्षो की कमाई पर दो और गिद्ध। इन क्लर्को मे ज्यादेतर बिहारी ही थे। चन्द्रा साहब के ऑफिस मे बंगालियों की दाल न गल पाई। जो दस बीस वहॉ थे. वो दिन भर फूटबॉल खेला करते थे। बिहारी वर्ग मे ज्यादेतर भूमिहार व कुर्मी थे. जो पटना आरा छपरा मोतिहारी सारण चम्पारन इत्यादि अंचलों से आए हुए थे। अपने नामों के आगे सब

सिंह लगा रखे थे। मकानो की किल्लत. फिर सीमित आमदनी की वजह से. सारे के सारे अपनी पत्नियॉ गॉव मे ही अपने मॉ बाप की सेवा मे छोड़ आए थे। थोड़ा बहुत पैसा ये लवन्डर पावडर के लिए अपने गॉव भेजते रहते थे। इनके बाप पूरे गॉव मे अपने सपूतों के मनीऑर्डर की रसीद दिखा आते थे और हॉक हॉक के सभी को सुना आते थे. . मेरा लड़का विनोद बड़ा आगे निकला। फोटो कॉपी सेक्सन मे अधिकारी है। घर पर उनकी अपनी बहूएँ मनीऑडर का सारा पैसा हँथिया कर उन्हे अपना अँगूठा दिखा देती थीं। इन गरीब मॉ बाप के बेटे शहरों मे तथाकथित अधिकारी थे. जिनकी बहूएँ अपने सास ससुर की सेवा मे लग कर अपने बच्चों के टट्टी हग्गल उन्ही से साफ करवा रही थी। पता नहीं कौन किसकी सेवा कर रहा था!राम दशरथ की या कौसल्या सीता की!

मँहगू सिंह वाली बैरक मे भी प्रोविडेन्ट फन्ड के चार पॉच क्लर्क रहते थे। मँहगू सिंह का बड़ा बेटा खुद इस ऑफिस मे अपर डिवीजन क्लर्क था और साथ साथ गुमटियॉ किराये पर देने का धन्धा करता था। उनका दूसरा बेटा मिलन सिंह दसवीं मे दो बार फेल हो कर लोकल रंगदार बना बैठा था। वो सूद पर रूपये भी लगाता था। पहली कक्षा मे मिलन मेरे साथ ही बैठता था और कक्षा का सबसे मेधावी बच्चा था। पता नही क्यों उसे रंगदारी की सूझी!मँहगू सिंह दिन भर शिव शिव कहके गॉजे की चिलम फूँकते रहते थे।

सदर अस्पताल से निकलकर उर्मिला फिर मेनगेट की झुग्गी मे आ गई। रामनाथ आए दिन लोगों से बूढे चोर निकाल मेरे पैसे सुनता रहता था। उसका ठीक किया गया पंचर पुलिस लाईन तक भी न टिकता था। टयूब मे छेद कहीं और चप्पी कहीं और। उसे दिखाई भी कम देता था।

अकस्मात मिलन व बैरक के दूसरे क्लर्कों को इस परिवार पर बड़ी दया आई। लानत है उस जीवन पर जो किसी के काम न आ सके। बैरक के आखिरी कमरे मे मनि का एक रिश्तेदार रहता था और धनवाद मे खस के परदों का धन्धा करता था। पहला कहर उसी पर टूटा. . भाग मदरासी. सम्हाल अपना बम भोंसड़ा

इस कमरे मे रामनाथ उर्मिला को लेकर आ गया। बैरक के ठीक सामने सड़क के किनारे एक गुमटी खड़ी हो गई. जिसमे रामनाथ काले फ्रेम का पावर वाला चश्मा लगाए फोटो मढने लगा। राम सीता शिव पार्वती संतोषी मॉ हनुमान जी हेमा श्रीदेवी जितेन्द धर्मेन्द की फ्रेमो मे मढी तश्वीरें हॉथो हॉथ विकने लगीं। किस घर मे आए दिन हिलती डुलती कीलों पर टँगी तश्वीरें हवा के एक हल्के झोके से गिरकर नही टूटती फूटती रहती हैं!रामपुकार बाबू. चन्दन सिंह. कपिलदेव बाबू. रामनगीना सिंह. लक्ष्मी सिंह. मुखदेव सिंह. और मिलन सिंह के संरक्षण मे रामनाथ का धन्धा चल निकला। इस परिवार पर इन कुर्मियों और भूमिहारो के दया व सहानुभूति की एक समवेत भीनी बौछार पड़ी. जिसमे ज्यादेतर उर्मिला को ही नहाना पड़ा। उसी की साड़ी चोली डटकर भिंगी। इन सारे उपकारों का धन्यवाद उर्मिला को ही चुकाना पड़ा। ये लोग उसे साधिकार भोगने लगे। दस वीस रूपये भी छोड़ जाते थे। इतना ही नही. इनके साथी भी कुत्ते वाले रास्ते से आकर इस तलैया मे डुवकी मार जाते थे। मँहगू सिंह भी ये कहते. सुना है कि आप को फेवर है. उर्मिला का हाल चाल पूछ आते थे और इसी वहाने उसके सानिध्य का लाभ उठा लेते थे।

बैरक का दरवाजा अहर्निश चरमराता खुलता व बन्द होता रहता था। उर्मिला भी अब काफी उन्मुक्त हो चली थी। एकाध फिल्मी डायलॉग भी दुहरा लेती थी। बैरक के कमरे मे दिन भर फूल वाल्यूम पर ट्रान्जिस्टर बजता रहता था। रामनाथ शिव पार्वती की तश्वीरें मढता रहता था. और उर्मिला. जोवना से चूनरिया खिसक गई रे की धुन पर अपना ऑचल छाती से सरकाकर थिरकती रहती थी।

वो अभी भी अट्ठारह वर्ष की न हुई थी पर उसे पेशेवर रंडी बनने मे या धनवाद को उसे बनाने मे ज्यादे वक्त न लगा। क्लर्क. सिपाही. ठिकेदार. स्कूलों के टीचर्स. टेम्पो मिनि वसों के मालिक. डाइवर्स. कन्डक्टर्स. छोटे बड़े दलाल सभी उसके ग्राहक थे। सौन्दर्य भी तो उसे सीधे रति से विरासत मे मिला था। घर का खाना होटलों से ही आता था. अब तो घर मे व्हिस्की का अद्धा पऊवा भी आने लगा। रामनाथ को इन सब बातों की खबर थी। वो घर आना ही बन्द कर दिया। दिन मे इधर उधर से चाय पकौड़े खाकर शाम को गुमटी की शटर गिराकर वो वहीं सो जाता था। बाप बेटी के बीच रमा के सपनो की दीवार ऊँची ही होती चली जा रही थी।

एक दिन गई दुपहरिया तक गुमटी की शटर न खुली। लोग बाग शंकित हुए। भागे दौड़े उर्मिला के पास पहुँचे। उर्मिला कुँए के पास अपना ऑचल गिराए अपने घूँघराले बाल सूखा रही थी। खबर सुनते ही गुमटी की ओर भागी। पलक झपकते गुमटी के आगे सैकड़ो की भींड़ जमा हो गई।

ःरामनाथ जी! अरे दुकान तो खोलिए. बारह बजने को आएःआज दिन भर विसराम करने का विचार है क्या!शटर खटखटाकर हर तरह से रामनाथ को जगाने का प्रयास होने लग पड़ा। पर रामनाथ अब जगने के लिए न सोया था। तोड़ताड़ कर गुमटी की शटर खोली गई। रामनाथ के प्राण पखेरू उड़ चले थे। उर्मिला के आर्त्तनाद से. . तोहरे विना हम कइसे जियव ए मोरे बाबू. . कई लोग अपनी धोती उठा उठा कर अपने ऑसू पोंछ रहे थे।

ये वो ही रामनाथ था. जो अकेला खड़ा कल्चरल क्लव के बरामदे मे अचेत नंगी उर्मिला के सामने कलप रहा था। उसके न सिर्फ पंजर. वरन उसके गले की हर नसें तक गिनी जा सकती थीं। सरकी जंघिया. लाल करधनी. हॉथ मे वही लुंगी. जिसे बलातकारी उसके मँह मे ठूँसकर उसके चौदह वर्ष की अछूत कन्या उठा ले गए थे। किसी ने उसके कन्धे पर हॉथ तक न धरा। जमी भींड़ अभीं भी नंगी पड़ी उसके बेटी के तिल और मस्से ढूँढने और गिनने मे मगन थी। उसके उतारों चढावों का नेत्र लाभ उठा रही थी। रामनाथ भी वही था. लोग भी वही थे. बस वो कल था और अब ये आज।

कई सम्मानित कन्धों पर उर्मिला के बाबू की अर्थी उठी। अब विना बाप के अनाथ लड़की का दुख आधे से ज्यादे धनवाद का अपना दुख बन गया। उसके दरवाजे पर लोगो का तॉता लगा रहता था।

सोलह वर्ष धनवाद ने उसे अविराम भोगा। न जाने उर्मिला ने कितनो के ऑसू अपने ऑचल से पोंछे कितनों का सर अपनी छाती पर रखा. कितनो के सामने अपने पॉव फैलाए और अपने को रौंदवाया!आज वही धनवाद उसकी छाया से भी दूर भागता था। उसके कई ग्राहक तो वावा दादा तक बन गए थे और अपने नाती पोतों से मचिया पर बैठे अपने पॉव छूवाते रहते हैं।

उर्मिला न तो पत्नी बन सकी और न मॉ। बस उसे अपने जीवन मे रमा और रामनाथ का गरीव मोह मिला. साथ साथ उसे चार नाम भी मिले।

ःरामनाथ के लिए वो उर्मिला थी. रमा के लिए उरमिलवा. उसके ग्राहक उसे उर्मिला जी कहके बुलाते थे। जब उसके शरीर ने उसका साथ देना बन्द कर दिया और उसे कोई यौनिक वीमारी लग गई . तब धनवाद ने उसे रंडी कहना शुरू कर दिया।

कुछ विधियों से आई लक्ष्मी पता नही क्यों बड़ी अस्थिर और चंचल होती हैं!पैसे तो वो न जोड़ पाई. पर आकर्षण उसके पास अभी भी था. बस इस

करकट बीमारी ने उसका शरीर थुलथुला दिया था।

अगर उसे लोग लक्षीपुर ढाल मे अपने बाप के गुमटी की बची देवी देवताओं की तश्वीरे दीवारों पर सजाकर पॉव फैलाते या समेटते देखना चाहते हैं .या शाहजहॉपुर मे ठीक दुपहरिया मे गोड़वा जरे ला रामा गोड़वा जरे ला रामा होःगाते हुए अपना ऑचल गिराकर थिरकना देखना चाहते हों तो देखें।मेरी बला से वो मोतिहारी मे भीख मॉगे. हजारीबाग जंक्शन पर कचौरियॉ तले।पर मै नही समझता कि उर्मिला ने धनबाद किसी दूसरे शहर की वजह से छोड़ा था।रेल की पटरियों पर आए दिन दुर्घटनाएँ होती हैं. कितने लाशों की शिनाख्त हो पाती है!उर्मिला और रंडी के दरम्यान अर्थात इस बत्तीस वर्ष का सफर मात्र एक पटरी से पटरी तक का सफर था।

ये भी सम्भव है कि मै स्वयम इस सफर को इससे ज्यादा लम्बा नही करना चाहता हूॅ और न देखना चाहता हूॅ।

आज या कल इस सफर का यही अन्त होना था।

धनबाद बड़ा निर्मम शहर है।

प्रमोद कुमार सिंह